Page No.: 1
Date: / /

○ धार्मिक पहेलियाँ -

1] एक अक्षर का मेरा नाम, मैं हूँ पंच प्रभु का धाम।
जन जन करते मेरा ध्यान, पूरे जिनागम का सार॥ ओम ॐ

2] छः अक्षर का मेरा नाम, सबको बताता मुक्ति मार्ग।
कितना सुंदर है मेरा धाम, बोलो क्या क्या यह काम॥
- दिव्यध्वनि

3] पाँच अक्षर का मेरा नाम, शुद्धातम का मुझमे धाम।
कुन्दकुन्द ने मुझे बनाया, बताओ जल्दी मेरा नाम॥
- समयसार

4] दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ मुक्ति के काम।
प्रथम कटे तो रम बन जाऊँ, अन्त कटे तो घर बन जाऊँ॥
- धर्म

5] पाँच अक्षर का मेरा नाम, चारोगति में मेरा धाम॥
उल्टी श्रद्धा मेरा काम, संसारी मुझसे परेशान॥
- मिथ्यात्व

6] मुझे चाहिये रूपया पैसा, बोलो मेरा रूप है कैसा।
तृष्णादेवी माता मेरी, तीन लोक की संपत्ती भ्राता॥
- परिग्रह

7] मननशील कहलाता हूँ, चारो गति मे आता हूँ।
संयम धारण करके मैं, मुक्तिपुरी भी जाता हूँ॥
- मनुष्य

8] तीन अक्षर का मेरा नाम, मुझसे चलता है संसार।
जिसने मुझे मुख को मोड़ा, उसका कटता है संसार॥
- आस्रव

Scanned by CamScanner

Page No.: 2
Date: / /

9] 3 अक्षर का मेरा नाम, आता हुँ रहनें के काम।
मुझसे बड़ा कोई न जग मे, नाम बताओं मेरा भाई॥

— आकाश

10] चार अक्षर का मेरा नाम, मुझको क्या दुनिया से काम।
ज्ञान ध्यान बस व्यापार, मुक्ति पाने को मैं तैयार॥
दिखने मे लगता कंगाल, फिर भी हुँ मै मालामाल॥

— मुनिराज

11] चार अक्षर का मेरा नाम, तीर्थंकर में मेरा नाम।
अन्त [illegible] कटे तो महा बन जाये, आदि कटे [illegible] ~~वीर~~ कहलाये॥

— महावीर

12] पूर्व विदेह मे विदयमान हैं, भरत क्षेत्र मे है गुणगान।
केवल ज्ञान के धारी है वो, बोलो भाई उनका नाम॥

— सीमंधर स्वामी

13] 3 अक्षर का उनका नाम, इन्द्रभूति था उनका नाम।
जिनागम मैं उनका काम, द्वादशांग है उनका धाम॥

— गौतम [गणधर]

14] तीन अक्षर का मेरा नाम, अन्त कटे तो सर्व बचे।
मुझमे लोकालोक झलकते, मैं हुँ अनंत गुणों की खान॥

— सर्वज्ञ

15] चार अक्षर का मेरा नाम, छः खण्डों में मेरा धाम।
जीव अवस्था मे बतलाता, मुझको रचते दौलत राम॥

— छहढाला

16] दो अक्षर का मेरा नाम, सारे जग मे आता काम।
मुख्य गौण करके मैं जानु, मुलतान में मेरा धाम॥

— नय

17] च्यार अक्षर का मेरा नाम, मेरा नाम है बड़ा महान।
प्रथम श्रेष्ठ के कर्ता को; मैंने ही बस दिया है ज्ञान।।

- धरसेन आचार्य

18] छह अक्षर का मेरा नाम, बाह्य विभूति मेरा काम।
बारह सभाये मुझमें लगती, भाई बताओ मेरा नाम।।

- समवशरण

19] पाँच अक्षर का मेरा नाम, सब को जानना मेरा काम।
मै रहता हूँ अपने अन्दर, फिर भी दुनिया मेरे अन्दर।।

- केवलज्ञान

20] एक पुरुष जिनवर ने देखा, पाँव पसारे खड़ा हुआ।
पतली कमर पर हाथ रखे है, अनादि काल से खड़ा हुआ।।

- त्रिलोक

21] कर्म प्रधान कथन है मेरा, गुणस्थानों का मुझमे नाम।
त्रिलोकादि का वर्णन करता, बोलो भाई तुम मेरा नाम।।

- करणानुयोग

22] आतम ध्याना, आतम ध्याना, आतम मे रम जाना आतम ध्याना।
अष्ट कर्म की हानी घटा तो रहता है मस्ताना आतम ध्याना।।

- सम्यग्दृष्टी

23] मुनिराजों की बात बताता, वीतरागता को दर्शाता।
महापुरुषों की बात बताकर, वीतरागता को दर्शाता।।
पुण्य-बंध भी मै करवाता, मुझे बताओ क्या कहलाता।।

- प्रथमानुयोग

24] अणु-अणु जो देखा जाता, सत्यासत्य बतलाती है।
अरहंतो की दिव्यध्वनि है, केवलि वाण्या कहलाती है।।

- जिनवाणी

25] आठ अक्षर का मेरा नाम, नौ अध्यों का मुझमें धाम।
मै स्वयं मे अपूर्ण हूँ, पर कहलाता अपूर्व हूँ।।

— मोक्षमार्ग प्रकाशक

26] निगोद से लेकर मुक्तिपुरी को, मैं हूँ मार्ग बताता हूँ।
छोटा समयसार के नाम से मै अपना परिचय पाता।।

— छहढाला

27] स्वर्गों का राजा कहलावे, तीर्थंकर को न्हवन करावे।
चिन्ह देखता सबसे पहले, कौन है उसका नाम बताओ।।

— सौधर्म इन्द्र

28] द्वादशांगो से सजी हुई है केवली कन्या मेरा नाम।
जो भी मेरा आश्रय लेता वह बन जाता है भगवान।।

— जिनवाणी

29] एक भूतनी हमने देखी, नागिन जैसा उसका काम।
बत्तीस भूत करते सहयोग, रहती एक गुफा के धाम।।

— जीभ

30] 6 द्रव्यों का ज्ञान कराती, नव तत्त्वों को भी बतलाती।
अनेकान्तमय धर्म बताती, स्याद्वाद शैली अपनाती।।

— जिनवाणी

31] एक नागिन की ऐसी करनी, सब कुछ चटकर जाती है।
लुब्धक के वह वश मे रहती, धर्म भ्रष्ट करवाती है।

— रसनेन्द्रिय

32] चार अक्षर का मेरा नाम, चेतन का क्या मुझसे काम।
मुझमे भ्रमित हुआ है राम सारे जग मे मेरा धाम।।

— मिथ्यात्व

Scanned by CamScanner

Page No.: 5
Date: / /

33] मै सबको कषाकर दुःख देती, सबकी सुख शान्ति हर लेती।
मै हुँ आकुलता की माता, मेरा नाम सबको है ज्ञात।।
\- कषाय

34] दो अक्षर का मेरा नाम, परिणमन कराए का ही काम।
पूरे जग मे रहता हुँ, एक प्रदेश मेरा आकार।।
(फिर भी हुँ मैं अनस्तिकाय)
\- कालद्रव्य

35] जिसके सिर पर मैं हुँ आता, उसके ओठ भुजा फड़फड़ाता।
जो मुझसे अन्धा हो जाता, छोटा बड़ा न उसे सुहाता।।
\- क्रोध

36] हितकारी अति मिष्ठ है, तीन जगत का इष्ट है।
जिनवाणी कहलाती है, मोक्षमार्ग बतलाती है।।
\- दिव्यध्वनी

37] सबको मुक्ति मार्ग बताती, तीर्थंकर के मुख से खिरती।
छह अक्षर का मेरा नाम, बोलो बच्चो मेरा नाम।।
\- दिव्यध्वनी

38] मैं हुँ सब पापों का बाप, नाम बताये मेरा आप।
सारा जग मेरे आधीन, सब कुछ है फिर भी मैं दीन।।
\- लोभ

39] छेदन भेदन दुःख भोगुं, पराधीनता मेरा काम।
मायाचारी से जन्मी हुँ, चौपाया भी मेरा नाम।।
\- तिर्यञ्चगति

40] सब पापी मेरे घर आते, सात घरों मे है दुःख पाते।
तिल तिल होवे तन के खण्ड, भूख, प्यास भी लगे प्रचण्ड।।
\- नरकगति

Scanned by CamScanner

41] सुख का पूरा धाम है, परमात्मा भी नाम है।
सिद्धों का तो धाम है, पीड़ित का क्या काम है।।
- मोक्ष

42] ऐसे शाश्वत पर्व बताओ, महिने मे आते दो बार।
संयम समता भाव जगाना, रहता है अपना उस दिन काम।।
- अष्टमी, चतुर्दशी

43] गुरु की आज्ञा मे रहते है, अध्ययन मनन नित करते हैं।
द्रव्य श्रुत के ज्ञाता पूरे, सब को शिक्षा वह देते है।।
- उपाध्याय

44] बीस आठ पालन करते है, बाईस को वह जीत रहे हैं।
पंच परम पद की श्रेणी मे, उनको सब पहिचान रहे है।।
- साधु

45] काम किसी के कभी न आता, पर अपना अस्तित्व बताता।
उसको हम स्वीकार रहे है, पर कर्ता नहीं मान रहे है।।
- निमित्त

46] ज्ञान ध्यान तप लीन मुनिवर, सर्प राजाने डाला।
रानी ने उपसर्ग हटाया, निरतिचार उपसर्ग सहा था।।
पर मुनिवर ने धर्मवृद्धि का, दोनो को उपदेश दिया था।।
- यशोधर मुनिराज

47] चार अक्षर का मेरा नाम, चेतन का नहीं नाम निशान।
इससे भ्रमित हुआ है सम, सारा जग है मेरा धाम।।
- पुद्गल

48] दो अक्षर का मेरा नाम, रहता हूँ मैं सुख के धाम।
करने को कुछ काम नहीं, दुःख का नामनिशान नहीं।।
- सिद्ध

Scanned by CamScanner

Page No.: 7
Date: / /

49] ऐसा शाश्वत पर्व बताओ, तीन बार वर्ष मे आता।
संयम समता भाव जगाता, हम सब के यह मन को भाता॥
— दशलक्षण पर्व

50] दो अक्षर का मेरा नाम, बिना कमाये हो आराम।
लोग अमर मुझको कहते है, अमृत पिने का है काम॥
फिर भी मर जाता हुँ मै, इससे रहता हुँ हैरान॥
— देव

51] निरतिचार शील की महिमा, शूलि से सिंहासन बन गई।
व्रतपालन की अनुपम शक्ति, नाम सेठ का रोशन कर गई॥
— सेठसुदर्शन

52] जिनको होता केवलज्ञान, चार अक्षर में आते नाम।
पहले दो अक्षर का अर्थ गुजर, अन्त के अक्षर राग बनत॥
— वीतरागी

53] शब्द सुनें से लगे जकड, जैन तीर्थ है बड़ा सुघड़।
बुंदेलखण्ड मे है यह स्थान, तीन अक्षर मे पुरा नाम॥
— बंधाजी

54] बुंदेलखण्ड का तीर्थ महान, तीन अक्षर का उसका नाम।
मुनि चर्या मे नित्य प्रयोग, मिला है जिसे सिद्ध संयोग॥
— आहारजी

55] चार अक्षर का पुरा नाम, जिनमे है जिन भगवान।
पहले दो अक्षर करते शुरुआत, अंत के अक्षर स्वामी पात्र॥
— आदिनाथ

56] सीधा बोलों करे घमण्ड, उल्टा कर दो करे नमन।
कर स्थापना दो अक्षर मे जान, घुमा फिरा कर बनता नाम॥
— मान

57] पाँच अक्षर का पूरा नाम, इष्ट वंदना अर्थ महान।
यदि काट दूं आदि अंत बने शब्द वह वस्तु तुरन्त॥
- देवस्तुति

58] तीन अक्षर का पूरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
आता हूँ झुकने के काम, बतलाओ बंधुओ मेरा नाम॥
- नमन

59] जैन धर्म मे श्रेष्ठ विचार, दीन-दुःखी पर रखना प्यार।
उल्टा कर दूं होता याद, ऐसा धर्म सुनाऊँ आज॥
- दया

60] पाँच अक्षर का नाम अनुप, सब कोई देखे प्रभु रूप।
मध्य कटे से शब्द है दो पानी पराजय उनसे लो॥
- जलविहार

61] गंध सुगंध का है भंडार हवन मे डाले सब नर-नार।
दश लक्षण मे दशमी होय अति आवश्यकता इसकी होय॥
- धूप

62] दो अक्षर का ऐसा नाम, भारि कृपणता पाप समान।
उल्टा कर दो अच्छा सोच, भलो जगत मे सबको होय॥
- लोभ

63] चार अक्षर का पूरा नाम, जैन तीर्थ है बड़ा महान।
दो अक्षर मे पर्वत आये, शेष अक्षर मे नारि भाव॥
- गिरनार

64] चार अक्षर का मेरा नाम, 8 दिन तक चले विधान।
कोढ़ी राजा हुआ था ठीक, बतलाओ बंधुओ सुओ लीक॥
- सीद्धचक्र

65] तीन अक्षर का मेरा नाम, कुशल वैद्य मेरा काम।
आता है पूजा के काम, या माथे में लूँ विश्राम ॥

- चन्दन

66] चार कर्म से दूर रहते, चार कर्म पास में रहते।
रोटी पानी कभी न खाते, हम सब उनकी महिमा गाते॥

- अरहंत

67] सीमंधर के पास गये थे; जिनके अनुभव सभी नये थे।
जो अध्याय ध्वजा के धारी; जिनने महान शास्त्र रचे थे।

- कुन्दकुन्दाचार्य

68] सर्प देखा वैराग्य धरा था, मेंढक जिसके मुँह में फँसा था।
शांति भक्ति रचाने वाले चरण कमल से पूज्य हुआ था॥

- पुज्यपाद

69] भूख प्यास का नाम नहीं है, रागद्वेष का काम नहीं है।
परमौदारिक काया उनकी रहे जगत और ध्यान कहीं है॥

- अरहंत

70] सिद्ध प्रभु की भक्ति करावे, घर में ही वैरागी कहावे।
अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान, ऐसे विरागी का नाम बतावे॥

- भरत

71] महिमा जिनकी खूब सुनी है मित्रता की मिसाल बड़ी है।
तुंगीगिरि से मोक्ष पधारे उस मानुष का नाम बताओ॥

- सुग्रीव

72] राक्षस वंश में जो जन्मे थे, नित्यपूजन का नियम लिये थे।
चूलगिरि से मोक्ष पधारे, ऐसे सुत का नाम बताओ॥

- कुंभकर्ण

73] ऐलक जी एक नगर में आये, दीक्षा का जब भाव लाये।
बिना गुरु के दीक्षा पाये, मेघ सरज धरती पर आये॥

— आ. मायनंदी

74] स्याद्वाद की वो निशानी, चिदानंद की है रजधानी।
अनेकान्त का रूप बखानी, अमर तेरी जग में है कहानी॥

— जिनवाणी

75] स्वर्ग से चलकर देव जो आये, विद्याधर नाग का रूप बनाये।
लेते परीक्षा वीर की वो, उसमे वर्धमान नहीं घबराये॥

— संगम देव

76] काम स्वयं अपना करता, आशा नहीं किसी की करता।
अन्य लोग सब मिल जाते है, कार्य स्वतः ही हो जाता है॥

— उपादान कारण

77] मैं दोषों से दूर बहुत हूँ, गुणों का पूर्ण खजाना हूँ मैं।
विश्व भरा हो मुझसे जानो, अब तो तुम मुझे पहिचानो॥

— द्रव्य

78] दो अक्षर का मेरा नाम दो द्रव्यों के आता काम।
अपनी गति से चलते है चलते है फिर भी आता मेरा नाम॥

— धर्म (द्रव्य)

79] प्राणों की आहुति देकर, जिसने अपना भाई बचाया।
जैन धर्म की रक्षा करके, जग में अपना नाम कमाया॥

— निकलंक

80] मोक्षपुरी एक ने पाई, एक हुआ परिपूर्ण ज्ञानी।
उस दिन का तुम नाम बताओ, नहीं रहोगे तुम अज्ञानी॥

— दीपावली

८१] ऐसा तुम स्थान बताओ जहाँ जीव का आना जाना।
आते है अपने भावों से, जाते भी अपने भावों से ॥
– चारगतियाँ

८२] पृथ्वी ही जिसका शरीर है कंकड़ पत्थर जिसके धाम।
स्थावर का एक भेद हूँ बोलो भैया उसका नाम ॥
– पृथ्वीकायिक

८३] चिन्ह सिंह कहलाता है जिनका पावापुर निर्वाण महान।
नमस्कार करता प्रभुजी को वर्तमान का शासन जान ॥
– महावीर

८४] सुख धाम की प्रथम शिला है, कहते जिसे धर्मों का मूल।
बिन इसके जो देव दुःखी हैं, इसके सहित नरक अनुकूल ॥
– सम्यग्दर्शन

८५] जिसके कारण जीव घुमता, जिसके कारण होते पाप।
जिसके ज्ञान चारित्र है झूठे, जो सब पापों का बाप ॥
– मिथ्यात्व

८६] शाश्वत तीर्थ जिसे कहते है, मोक्ष गये अनंते जीव।
बीस तीर्थंकर मोक्ष पधारे, चौबीसों जाते है सदैव ॥
– सम्मेदशिखर

८७] 66 दिनों तक मौन रहे, प्रभु अवसर का इंतजार किया।
इन्द्रभूति ब्राह्मण आता तो जीवों का उद्धार किया ॥
– महावीर

८८] तीन लोक मे यही सार है, परमेष्ठि भी करते ध्यान।
जो भी इसका आश्रय लेता, करता है अपना कल्याण ॥
– वीतरागता

Scanned by CamScanner

८९] एलाचारी जिन्हें कहते है, कलिकाल सर्वज्ञ महान।
पाँच परमागम जिनके हैं प्रसिद्ध, पढ़ने से होता है कल्याण॥

- कुन्दकुन्दाचार्य

९०] चारों को विनशाया जिसने फिर भी चारों के साथ।
चार अक्षर का नाम है उनका चार अनंत जिनके साथ॥

- अरहंत

९१] 357 सूत्र है जिसमें संस्कृत मे है पहला ग्रंथ।
दस अध्यायों में विभक्त है कहलाता है मुक्ति का पंथ॥

- तत्त्वार्थसूत्र

९२] तीन अक्षर का मेरा नाम, स्थिर रहकर भी चलता है।
सारी दुनिया चलकर रुकती, दुनिया कहती मेरा नाम॥

- अधर्म (द्रव्य)

९३] शलाका पुरुषों की बात बताता, किंतु वीतरागता को ही दर्शाता,
महापुरुषों की बात बताकर, पुण्य बंध भी करवाता॥

- प्रथमानुयोग

९४] ज्ञान नहीं अज्ञान नहीं, सुख या दुःख का भान नहीं।
पाँच भाई है मेरे जग मे, जीव शब्द भी रहता मुझमे॥

- अजीव

९५] सीमंधर के पास गये जो, उत्तम अनुभव शास्त्र रचे।
पंचम युग के देव कहलाये, उनका नाम बताओ भाई॥

- आ. कुन्दकुन्द

९६] परम शत्रु है आस्रव मेरा, सम्यग्दर्शन छुड़वा भाई।
सबको शिवपुर मे ले जाता, कर्मों पर है ताकत लाता॥

- संवर

97] मुक्ति वधु की परम सहेली, तब है मुझे मित्र समान।
कर्म दहन की अग्नि बनु मैं, बोलो भैया मेरा नाम॥

- निर्जरा

98] दो अक्षर का मेरा नाम, नरकों मे है मेरा धाम।
मुझको जो अपनाता है, वह नरको मे जाता है॥

- पाप

99] सात अक्षर का मेरा नाम, पंच भावों में आता नाम।
चार भाव तो आते जाते, सदा काल है मेरा धाम॥

- पारिणामिकभाव

100] जो जीवों को दुःख देता है, वह मुझको धारण करता।
मैं ले जाता नरकों बीच, मुझमें है पापों का बीज॥

- हिंसा

101] सत्यरूप से मैं विपरीत, अज्ञानी से मेरी प्रीत।
मुझको जो भी करता है वह नरकों मे चल जाता है॥

- झूठ

102] सब लोगों का माल हड़पती, सबको मैं पहुँचाती जेल।
सबकी बदनामी करवाती, बतलाओ कैसा यह खेल॥

- चोरी

103] धर्म को बचाया है जिसने, जिनवाणी माँ का है पुत्र।
प्राण को गँवाया जिसने, पर जिनधर्म को किया मजबूत॥

- निकलंक

104] नाग बन गया पुष्पों का हार, पड़ा नायक मन में सवार।
नाम बताओ उस सती का, कर्म खिपावै भक्ति अपार॥

- सोमा सती

105] आतम स्वाद चखता हूँ, विदेहक्षेत्र से आया ज्ञान।
चारण ऋद्धि धारी हूँ, बतलाओ तुम मेरा नाम॥

— आ. कुन्दकुन्द

106] ग्यारह वर्ष की उम्र थी प्यारी उनमे जिनदीक्षा धारी।
कुन्द था तो प्यारा था परमागम रखवाला॥

— कुन्दकुन्दाचार्य

107] पाँच भाई पूज्य कहलाते, तीनों लोक उन्हे है ध्याते।
जो उनकी भक्ति निस करे, पाप से मुक्त वे हो जाते॥

— पंचपरमेष्ठि

108] एक ऐसा मनुष्य देखा खाता है ना पीता है।
अमृत भी नहीं पीता है फिर भी अनंत काल तक जीता है॥

— सर्वज्ञ

109] एक गया दो गया, तीन गया रे।
चार गया किन्तु चार रहा रे॥

— अरहंत परमेष्ठी

110] आँखो से आंसु टपटपके थे, पैरो मे थी बेडीयाँ।
फिर भी मुनि को दिया आहार, महिमा उस की अपरम्पार॥

— चन्दनबाला

111] दोनो भाई जुडवा आवे, बहिन को देख वैराग्य पावे।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधारे हम भी उनकी भक्ति रचावे॥

— देशभूषण-कुलभूषण

112] दो-दो केवली मुक्ति पधारे, बुंदेलखण्ड की शान बढ़ावे।
ढुंढ के उत्तर जल्दी बतावे, जिला टीकमगढ़ मे ही कहावे॥

— आहारजी

Scanned by CamScanner

113] एलाचार्य भी जो कहावे, गिद्ध पिच्छि को धारण करते।
अष्टपाहुड भी उनकी कृति है, महिमा उनकी खूब सुनी थी।।
- कुन्दकुन्दाचार्य

114] ऐसे गुरु का नाम बताओ, उनका शिवरात्रि प्रभाव बताओ।
पिण्डि फटी और प्रभुजी प्रगटे, भस्म व्याधि से जो थे जकड़े।।
- समंतभद्र

115] सासुजी ने घर से निकाला, पिता जी ने भी मुख को मोड़ा।।
22 बरस तक वियोग न जाने वह कौन संयोग।।
- अंजना

116] एक सती थी चंदनबाला, सेठानी ने कैद मे डाला।
नाम बताओ सेठानि का, जिसने चंदना सती को सताया।।
- सुभद्रा (मूलका)

117] काशी नगरी की बात सुनावा, नृप ने उनको बहुत सताया।
पाखण्डी का भांडा फोड़े नाम तो उनका थोड़ा जोड़े।।
- समंतभद्र

118] विषभी अमृत तुमने किया था, विषापहार स्तोत्र रचा था।
बेटे को जो तुरंत उठाया, भक्ति में मन जो खूब लगाया।।
- धनंजय

119] नृप ने उनको पीड़ा पहुँचाई, उनने भक्ति प्रभु की गाई।
देवों ने भी महिमा रचाई, ताले टुटे सभी दिखाई।।
- आ. मानतुंग

120] भर्तृहरि के भाई बतावे, जैनो में जैनाचार्य कहावे।
जीवंधर चरित्र के ये लेखक, उनको पूजत हम सब ध्यावत।।
- आ. शुभचन्द्र

Scanned by CamScanner

121] द्वारका नगरी जिसने बसाई, मुनि ने नगरी फिर वो मिटाई।
महापुरुष मे नाम जो आवे, लीला मे जो उपमा पावे ।।

— श्रीकृष्ण

122] मेरा तीरथ सबसे प्यारा, राजस्थान मे जो है न्यारा।
अतिशय क्षेत्र महान कहावे, माधोपुर जिला में आवे ।।

— महावीरजी

123] ऐसे गेट का नाम बताओ, जिससे कभी न कोई गुजरा।
बना है हड्डी का जो, रंग है जिसका उजला-उजला ।।

— कोलगेट

124] ऐसे बॉय का नाम बताओ, हिन्दुस्थान का बेटा है जो।
देह है जिसकी स्वत: बनी की, भरी हुई है जिसमें चर्बी ।।

— लाईफबॉय

125] कौनसा पॉलिस है वह, जिसके बनने में कई बंदर करते।
उस पॉलिस का नाम बताओ, नाम बताकर शिक्षा पाओ ।।

— नेलपॉलिस

126] बिल्ली का रज वीर्य है इतना कीड़ों का रस जिसमे मिलता।
दाधों खुले दामों पर मिलता जो भी लगाये चमड़ी मलता ।।

— क्रीम

127] पर्स बेल्ट और जूते चप्पल, बोल्ट और कॉलर या निप्पल।
जिन्दा पशुओं को कटवावे, जिससे बनता नाम बतायें ।।

— चमड़ा

128] जिसमे है कोई रस ना, उसके चक्कर में मत फँसना।
टी.वी. वाले बनाये कुछ, लेकिन उसका स्वाद न चखना ।।

— रसना

129] मौत का है पैगाम हुँ लाती, खुद भी जलती तुम्हे जलाती।
धुऐ मे मेरे निकोटीन है, बोलो तो मै क्या कहलाती है॥
- सिगरेट

130] दादाजी का हुँ मै कलेजा, बेकिंग करतई से मै बनता।
छुरी मारकर काटे मुझको, मौज मनाये खाये मुझको॥
- केक

131] पीने मे यह ठंडी लगती लेकिन शुगर के कण से बनती।
कार्बोहायड्रेट मिला हुआ है, माल विदेशी बना हुआ है॥
- पेप्सी

132] जन्म दिवसपर काम मे आती, लेकिन गोबर से है भाती।
जो भी खाये दाँत सडाये, बेचनेवाला मौज उडाये॥
- टॉफी

133] एक अंग का ज्ञान यहाँ था, दीक्षा अपना छेद किया था।
बिल्ली को जो बचाने वाले, याद अभिषेक बखान किया है॥
- आ. माघनंदि

134] अंत समय णमोकार सुनाया, कुत्ते को भी देव बनाया।
काया सुंदर चरम शरीरि, वैरागी थे आप सुमीरी॥
- जीवन्धर कुमार

135] रावण दूर घुम कर आया, विमानवासी चल न पाया।
पर्वत पर मुनि बालि विराजे, उस पर्वत का नाम बताये॥
- कैलाशपर्वत

136] सोता तु क्यों रोता जगमें लिखनेवाले मुक्ति मग मे।
आत्मख्याती के लेखक है वो उस महात्मा का नाम बताओ॥
- अमृतचन्द्राचार्य

137] ऐसे इन्द्र का नाम बताओ, चारबैर और पूँछ दिखाओ।
शत इन्द्रो में आनेवाला, इन्द्र की शोभा पाने वाला।।
— सिंह

138] जन्म से निर्ग्रन्थ भेषादि दिखाया, 11 वर्ष में मुनिपद पाया।
ऐसे सूरि का नाम बताओ, उसका उत्तर ढूंढ के लाओ।।
— कुन्दकुन्दाचार्य

139] जिनेन्द्र वर्णी एक कहावे, क्षुल्लक पद की पदवी पावें।
उसके अन्दर न थी व्याधि, कहाँ हुयी थी उनकी समाधि।।
— ईसरी

140] आठ गुणों को प्राप्त किया है, निराकार पद धार लिया है।
अब न उनको आना भव में, लीन रहे निज चेतन छग मे।।
— सिद्ध परमेष्ठि

141] सज में हो गया राग विराग, हुआ विवाह पर हो गया त्याग।
बालविवाह की शक्ति आई वीर पुत्र की माँ कहलाई।।
— सती अंजना

142] विफल होगई सारी चाल, पुण्यभाव से मालामाल।
णमोकार मंत्र की महिमा जान, हुआ सर्प से हार विधान।।
— सती सोमा

143] तीन बार वनवास है पाया, तोभी जिय को हिला न पाया।
सारे जग से पूज्य है माना, नाम बताओं जिसको आता।।
— सीता

144] मेरु श्री कंचन काहेसार जगभर माया, आहारग्रहण मुरख कहे तोभी कहीं न जाय।
तोभी कहीं न जाय देखो श्रद्धा की मूरत, कलिकालमी भैरव आवे जो पूजे बनजाये मुरख।
— रैवती

145] स्वयं भाग्य से सबको मिलता, अमिम वचन थे वे अनमोल।
नारी का आभूषण है वो, बोल सको तो मुख से बोल॥

– मैना सुंदरी

146] मिथ्या गुरु का मान गलायां सच्चे गुरु से मान बढ़ाया।
जैन धर्म का वह आभूषण, जिसकी श्रद्धा मे न लगा दूषण॥

– चेलना

147] सत्य श्रेष्ठ की रचना कीनी, जग की अनुपम निधियाँ दीनी।
मृत्यु लखकर भी मुस्कान, तत्त्ववेदी पर हुआ बलिदान॥

– टोडरमलजी

148] जिनकी लेखनी मे था श्रृंगार, अहो तत्त्व का है उपकार।
वह श्रृंगार विराग बन गया, एक रसिक विद्वान बन गया॥

– बनारसीदासजी

149] गागर मे सागर भर दीना, भवि जीवों को उपदेश है दीना।
दिव्यध्वनि दौलत बरसाई, जिन धर्म की महिमा गाई॥

– दौलतरामजी

150] जिनके स्वप्नों का सम्यक्, फल देख रहा संसार।
इनको देखकर जो भी होते, वह जाये भव पार॥

– सम्राट चन्द्रगुप्त

151] भारत की संता है वे, जैन धर्म के गौरव वे।
जल मे भिन्न कमल है वे, जिनधर्म पहिचान है वे॥

– भरतचक्रवर्ती

152] हर माता का वीर पुत्र वह, अतुलवीर्य बलवान महान।
कामदेव पदवी का धारी इनकी महिमा जग मे भारी॥

– हनुमान

Scanned by CamScanner

153] एक प्रतिज्ञा निश्चय धारी, मृत्यु भी हंसकर स्वीकारी।
तीर्थंकर पद पदवी पाई, दृढ़ प्रतिज्ञा रहना सब भाई॥
- पुरुरवा

154] जिनशासन पर यह बलिदान, याद रखेगा सकल जहान।
संकट में जिन धर्म न त्यागा, जिन शासन से था अनुराग॥
- निकलंक

155] वनराज जब सम्मुख आये, तो भी उनको डिगा न पाये।
मन में भये सत्व अपार, वनराज बने सब शाकाहार॥
- दीवान अमरचंद

156] ज्ञान विराग का अद्भुत खेल, किया विवाह पर हुआ न मेल।
लिया मोक्ष पद शुभ निर्वाण, पटना नगरी मंगल जान॥
- जम्बुस्वामी

157] खल मंडल में प्रमुख महान, सत्यधर्म का साथी मान।
राज संपदा सब ही त्यागी, रजा राम का पक्का साथी॥
- विभीषण

158] लक्ष्मी जिनकी दासी थी, संकट सहे महान।
जहाँ जहाँ वे पग धरे, वहाँ धन वैभव सम्मान॥
- धन्यकुमार

159] नट के फल को त्यागकर, लिया परम पद इष्ट।
एक रूप मुनिराज का, बाधा हरे अनिष्ट॥
- ब्रह्मगुलाल

160] अहोभाग्य तीर्थंकर मुनिवर आज यहाँ पधारे हैं, आहार प्रथम दो इक्षुरस का भाव सभी उमड़े।
धन्य मुनि परमदिगंबर, नश्वर जग का अचरज है, जिनके पद को शीश नवावत बादल
मानो गरजत है॥
- राजा श्रेयांस

Scanned by CamScanner